

स श्रीवणिकमुतो धीमान्मेरुवन्निश्चलाशयः । कर्मसन्दोहशत्रुघ्नो दद्यान्मे शाश्वतीं श्रियम् ॥१५॥
श्रीमत्सागरदत्तनामपणिकासच्छ्रेष्ठिनीनन्दनः पूतात्मा पणिको विलोक्य शिवदं श्रीवर्द्धमानं जिनम् ।
ज्ञात्वा स्वल्पतरं निजायुमखिलं त्यक्त्वा च मोहादिकं भूत्वा यस्तु मुनिः स मुक्तिमगमन्नित्यं सुखं मे क्रियात् ॥१६॥

इति कथाकोशे श्रीपणिकमुनेः कथा समाप्ता ।

६१. श्रीभद्रबाहुमुनेः कथा

नत्वा जिनं जगद्भद्रं सुरासुरनमस्कृतम् । भद्रबाहोर्मुनीन्द्रस्य चरित्रं कथ्यते हितम् ॥१॥
पुण्ड्रवर्द्धनसदृशे कोटीसन्नगरे वरे । राजा पद्मरथो धीमान्सोमशर्मा पुरोहितः ॥२॥
श्रीदेवी भामिनी तस्य तयोः पुत्रो बभूव च । भद्रबाहुर्गुणैर्भद्रो भद्रमूर्तिर्भवोत्तमः ॥३॥
एकदा प्रौढबालोऽसौ मौंजीबन्धे कृते सति । क्रीडां कुर्वन्पुत्रीबाह्ये भूरिबालजनैः सह ॥४॥
तत्र क्रीडाविधौ धीमान्गोलकांश्च त्रयोदश । क्रमेणोपरि संचक्रे बुद्ध्या हस्तकलान्वितः ॥५॥

किया । यहाँ तक कि उन्हें उसी समय केवलज्ञान हो गया और तुरन्त ही वे अघातिया कर्मों का नाश कर मोक्ष चले गए । वे सेठ पुत्र पणिक मुनि मुझे भी अविनाशी मोक्ष-लक्ष्मी दें, जिन्होंने मेरे समान स्थिर रहकर कर्म शत्रुओं का नाश किया ॥२-१५॥

सागरदत्त सेठ की स्त्री पणिका सेठानी के पुत्र पवित्रात्मा पणिक मुनि, वर्धमान भगवान् के दर्शन कर, जो कि मोक्ष के देने वाले हैं और उनसे अपनी आयु बहुत थोड़े जानकर संसार की सब माया-ममता छोड़ मुनि हो गए और अन्त में कर्मों का नाश कर मोक्ष गए, वे मुझे भी सुखी करें ॥१६॥

६१. भद्रबाहु मुनिराज की कथा

संसार का कल्याण करने वाले और देवों द्वारा नमस्कार किए गए श्रीजिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर पंचम श्रुतकेवली श्रीभद्रबाहु मुनिराज की कथा लिखी जाती है, जो कथा सबका हित करने वाली है ॥१॥

पुण्ड्रवर्द्धन देश के कोटीपुर नामक नगर के राजा पद्मरथ के समय में वहाँ सोमशर्मा नाम का एक पुरोहित ब्राह्मण था । इसकी स्त्री का नाम श्रीदेवी था । कथा-नायक भद्रबाहु इसी के लड़के थे । भद्रबाहु बचपन से ही शान्त और गम्भीर प्रकृति के थे । उनके भव्य चेहरे को देखने से यह झट से कल्पना होने लगती थी कि ये आगे चलकर कोई बड़े भारी प्रसिद्ध महापुरुष होंगे क्योंकि यह कहावत बिल्कुल सच्ची है कि “पूत के पग पालने में ही नजर आ जाते हैं ।” अस्तु ॥२-३॥

जब भद्रबाहु आठ वर्ष के हुए और इनका यज्ञोपवीत और मौंजीबन्धन हो चुका था तब एक दिन की बात है कि ये अपने साथी बालकों के साथ खेल रहे थे । खेल था गोलियों का । सब अपनी-अपनी होशियारी और हाथों की सफाई से गोलियों को एक पर एक रखकर दिखला रहे थे ।

सर्वभव्यार्चिते श्रीमद्वर्धमानजिनेशनि। मुक्तिं प्राप्ते च पञ्चानां चतुर्दशसुपूर्वणाम् ॥६॥
 मध्ये यस्तु चतुर्थस्तु चतुर्दशसुपूर्ववित्। गोवर्द्धनो मुनिः श्रीमदूर्जयन्तगिरौ शुभे ॥७॥
 वन्दनार्थं प्रगच्छन्सन्स कोटीपुरमागतः। दृष्ट्वा तद्गोलकक्रीडाविज्ञानं भुवनोत्तमम् ॥८॥
 चतुर्दशमहापूर्वधरोयं पञ्चमो ध्रुवम्। भद्रबाहुर्विशुद्धात्मा भाविश्रीश्रुतकेवली ॥९॥
 इति ज्ञात्वा ततः प्रोक्त्वा सोमशर्माद्विजस्य च। नीत्वा तं बालकं स्वान्तं सर्वशास्त्राणि सद्गुरुः ॥१०॥
 पाठयित्वा जगत्सारशर्मकारीणि देहिनाम्। प्रेषयामास तद्गेहं स्वामी सर्वगुणाकरः ॥११॥
 भद्रबाहुस्ततो बालस्त्यक्त्वा गेहादिकं पुनः। गोवर्द्धनमुनेः पार्श्वं समागत्य द्रुतं सुधीः ॥१२॥
 दीक्षामादाय जैनेन्द्रीं स्वर्गमोक्षसुखप्रदाम्। मुनिर्भूत्वाभवत्सोपि चतुर्दशसुपूर्ववित् ॥१३॥
 ज्ञाततत्त्वब्रजः प्राणी गृहावासं कुतो भजेत्। आस्वादितामृतस्वादुः कथं पिण्याकमाचरेत् ॥१४॥
 गोवर्द्धनगुरौ तस्मिन्स्वर्गलोकं गते सति। संघाधारस्ततो भूत्वा भद्रबाहुः श्रुतेक्षणः ॥१५॥
 संघेन महता सार्द्धं भव्यशस्यापि तर्पयन्। स्ववाक्यामृतधाराभिरुज्जयिन्यां समागतः ॥१६॥
 चर्यायां स प्रतिष्ठः सन्नुत्संगे संस्थितेन च। अव्यक्तबालकेनोक्तो गच्छ गच्छेति भो मुने ॥१७॥

किसी ने दो, किसी ने चार, किसी ने छह और किसी-किसी ने अपनी होशियारी से आठ गोलियाँ तक ऊपर तले चढ़ा दी। पर हमारे कथानायक भद्रबाहु इन सबसे बढ़कर निकले। इन्होंने एक साथ चौदह गोलियाँ तले ऊपर चढ़ा दीं। सब बालक देखकर दंग रहे गए। इसी समय एक घटना हुई वह यह कि-श्रीवर्धमान भगवान् को निर्वाण लाभ के बाद होने वाले पाँच श्रुतकेवलियों में चौदह महापूर्व के जानने वाले चौथे श्रुतकेवली श्री गोवर्द्धनाचार्य गिरनार की यात्रा को जाते हुए इस ओर आ गए। उन्होंने भद्रबाहु के खेल की इस चकित करने वाली चतुरता को देखकर निमित्तज्ञान से समझ लिया कि पाँचवें होने वाले श्रुतकेवली भद्रबाहु ही हैं। भद्रबाहु से उनका नाम वगैरह जानने पर उन्हें और भी दृढ़ निश्चय हो गया। वे भद्रबाहु को साथ लिए उसके घर पर गये। सोमशर्मा से उन्होंने भद्रबाहु को पढ़ाने के लिए माँगा। सोमशर्मा ने कुछ आनाकानी न कर अपने लड़के को आचार्य महाराज के सुपुर्द कर दिया। आचार्य ने भद्रबाहु को लाकर खूब पढ़ाया और सब विषयों में उसे आदर्श विद्वान् बना दिया। जब आचार्य ने देखा कि भद्रबाहु अच्छा विद्वान् हो गया तब उन्होंने उसे वापस घर लौटा दिया इसीलिए कि कहीं सोमशर्मा यह न समझ ले कि मेरे लड़के को बहका कर इन्होंने साधु बना लिया। भद्रबाहु घर गए सही, पर अब उनका मन घर में न लगा। उन्होंने माता-पिता से अपने साधु होने की प्रार्थना की। माता-पिता को उनकी इस इच्छा से बड़ा दुःख हुआ। भद्रबाहु ने उन्हें समझा बुझाकर शान्त किया और आप सब माया-मोह छोड़कर गोवर्द्धनाचार्य द्वारा दीक्षा ले योगी हो गए। सच है, जिसने तत्त्वों का स्वरूप समझ लिया वह फिर गृह जंजाल को क्यों अपने सिर पर उठायेगा? जिसने अमृत चख लिया है वह फिर क्यों खारा जल पीयेगा? मुनि होने के बाद भद्रबाहु अपने गुरुमहाराज गोवर्द्धनाचार्य की कृपा से चौदह महापूर्व के भी विद्वान् हो गए।

तत्समाकर्ण्य तत्त्वज्ञो भद्रबाहुर्मनीश्वरः। सत्यं द्वादशवर्षेषु दुर्भिक्षं संभविष्यति ॥१८॥
 ज्ञात्वेति सोन्तरायं च कृत्वा स्वस्थानमागतः। सन्ध्याकाले तदा सर्वमुनीनामग्रतोऽवदत् ॥१९॥
 अत्र द्वादशवर्षाणि भावि दुर्भिक्षकं ध्रुवम्। मया स्वल्पायुषात्रैव स्थीयते भो तपस्विनः ॥२०॥
 यूयं दक्षिणदेशं तु संगच्छन्तु कृतोद्यमाः। इत्युक्त्वा दशपूर्वज्ञं विशाखाचार्यसन्मुनिम् ॥२१॥
 स्वशिष्यं संघसंयुक्तं सुधीः संज्ञानलोचनः। प्रेषयामास चारित्र-रक्षार्थं दक्षिणापथम् ॥२२॥
 तदा ते मुनयः सन्तो गत्वा तत्र सुखं स्थिताः। गुरोर्वाक्यानुगाः शिष्याः संभवन्ति सुखाश्रिताः ॥२३॥
 ततश्चोज्जयिनी नाथश्चन्द्रगुप्तो महीपतिः। वियोगाद्यतिनां भद्रबाहुं नत्वाभवन्मुनिः ॥२४॥
 तदा श्रीभद्रबाहुश्च मुनीन्द्रः सुतपोनिधिः। श्रीमज्जिनेन्द्रचन्द्रोक्त-सारतत्त्वविदांवरः ॥२५॥
 उज्जयिन्यां सुधीर्भद्रः वटवृक्षसमीपके। क्षुत्पिपासादिकं जित्वा संन्यासेन समन्वितः ॥२६॥
 स्वामी समाधिना मृत्वा संप्राप्तः स्वर्गमुत्तमम्। सोस्माकं सन्मुनिर्दद्यात्सन्मार्गं शर्मकोटिदम् ॥२७॥

जब संघाधीश गोवर्द्धनाचार्य का स्वर्गवास हो गया तब उनके बाद पट्ट पर भद्रबाहु श्रुतकेवली ही बैठे। जब भद्रबाहु आचार्य अपने संघ को साथ लिए अनेक देशों और नगरों में अपने उपदेशामृत द्वारा भव्यजनरूपी धन को बढ़ाते हुए उज्जैन की ओर आए और सारे संघ को एक पवित्र स्थान में ठहरा कर आप आहार के लिए शहर में गए। जिस घर में इन्होंने पहले ही पाँव दिया वहाँ एक बालक पालने में झूल रहा था और जो अभी स्पष्ट बोलना तक न जानता था; इन्हें घर में पाँव रखते देख वह सहसा बोल उठा कि “महाराज, जाइए! जाइए! जाइए!! एक अबोध बालक का बोलना देखकर भद्रबाहु आचार्य बड़े चकित हुए। उन्होंने उस पर निमित्तज्ञान से विचार किया तो उन्हें जान पड़ा कि यहाँ बारह वर्ष का भयानक दुर्भिक्ष पड़ेगा और वह इतना भीषणरूप धारण करेगा कि धर्म-कर्म की रक्षा तो दूर रहे, पर मनुष्यों को अपनी जान बचाना भी कठिन हो जाएगा। भद्रबाहु आचार्य उसी समय अन्तराय कर लौट आए। शाम के समय उन्होंने अपने सारे संघ को इकट्ठा कर उनसे कहा—साधुओं, यहाँ बारह वर्ष का बड़ा भारी अकाल पड़ने वाला है, और तब धर्म-कर्म का निर्वाह होना कठिन ही नहीं, असम्भव हो जाएगा। इसलिए आप लोग दक्षिण दिशा की ओर जायें और मेरी आयु बहुत ही थोड़ी रह गई है। इसलिए मैं इधर ही रहूँगा। यह कहकर उन्होंने दसपूर्व के जानने वाले अपने प्रधान शिष्य श्री विशाखाचार्य को चारित्र की रक्षा के लिए सारे संघसहित दक्षिण की ओर रवाना कर दिया। दक्षिण की ओर जाने वाले उधर सुख-शान्ति से रहे। उसका चारित्र निर्विघ्न पला और सच है, गुरु के वचनों का मानने वाले शिष्य सदा सुखी रहते हैं ॥४-२३॥

सारे संघ को चला गया देख उज्जैन के राजा चन्द्रगुप्त को उसके वियोग का बहुत रंज हुआ। उसने भी दीक्षा ले मुनि बन गए और भद्रबाहु आचार्य की सेवा में रहे। आचार्य की आयु थोड़ी रह गई थी, इसलिए उन्होंने उज्जैन में ही किसी एक बड़ के झाड़ के नीचे समाधि ले ली और भूख-प्यास

श्रीसोमशर्माद्विजवंशसन्मणिः श्रीभद्रबाहुर्मुनिसत्तमाग्रणीः ।
जिनेन्द्रधर्माब्धिसमग्रचंद्रमाः कुर्यात्सतां सारसुखाश्रिताः शुभाः ॥२८॥
इति कथाकोशे पञ्चमश्रुतकेवलिश्रीभद्रबाहुमुनेराख्यानं समाप्तम् ।

६२. द्वात्रिंशच्छ्रेष्ठिपुत्राणां कथा

श्रीसर्वज्ञं प्रणम्योच्चैर्लोकालोकप्रकाशकम् । द्वात्रिंशच्छ्रेष्ठिपुत्राणां चरित्रं रचयाम्यहम् ॥१॥
कौशाम्बीनगरे रम्ये द्वात्रिंशच्छ्रेष्ठिनोभवन् । इन्द्रदत्तादयः ख्याता भूरिद्रव्यसमन्विताः ॥२॥
तेषां समुद्रदत्ताद्याः पुत्रा द्वात्रिंशदुत्तमाः । ये जाताः सद्गुणोपेताः सारसम्यक्त्वमण्डिताः ॥३॥
सर्वे ते जिनपादाब्ज-सेवनैकमधुव्रताः । परस्परं सुमित्रत्वं प्राप्ताः सद्धर्मशालिनः ॥४॥
अहो पुण्यस्य सामग्री सर्वे ते श्रेष्ठिनां सुताः । लक्ष्मीमित्रत्वसद्धर्म-सादृश्यं यत्समागताः ॥५॥
एकदा त्रिजगत्पूज्यं केवलज्ञानलोचनम् । श्रीजिनेन्द्रं गुणैः सान्द्रं समभ्यर्च्य प्रभक्तितः ॥६॥
नत्वा स्तुत्वा सुरैः स्तुत्यं धर्ममाकर्ण्य निर्मलम् । सर्वे समुद्रदत्ताद्या महाभव्यमतल्लिका ॥७॥

आदि की परीषह जीतकर अन्त में स्वर्गलाभ किया । वे जैनधर्म के सार तत्त्व को जानने वाले महान् तपस्वी श्रीभद्रबाहु आचार्य हमें सुखमयी सन्मार्ग में लगावें ॥२४-२७॥

सोमशर्मा ब्राह्मण के वंश के एक चमकते हुए रत्न, जिनधर्मरूप समुद्र के बढ़ाने को पूर्ण चन्द्रमा और मुनियों के, योगियों के शिरोमणि श्रीभद्रबाहु पंचम श्रुतकेवली हमें वह लक्ष्मी दें जो सर्वोच्च सुख की देने वाली है, सब धन-दौलत, वैभव-सम्पत्ति में श्रेष्ठ है ॥२८॥

६२. बत्तीस सेठ पुत्रों की कथा

लोक और अलोक के प्रकाश करने वाले-उन्हें देख जानकर उनके स्वरूप को समझाने वाले श्रीसर्वज्ञ भगवान् को नमस्कार कर बत्तीस सेठ पुत्रों की कथा लिखी जाती है ॥१॥

कौशाम्बी में बत्तीस सेठ थे । उनके नाम थे इन्द्रदत्त, जिनदत्त, सागरदत्त आदि । इनके पुत्र भी बत्तीस ही थे । उनके नाम समुद्रदत्त, वसुमित्र, नागदत्त, जिनदास आदि थे । ये सब ही धर्मात्मा थे, जिनभगवान् के सच्चे भक्त थे, विद्वान् थे, गुणवान् थे और सम्यक्त्वरूपी रत्न से भूषित थे । इन सबकी परस्पर में बड़ी मित्रता थी । वह एक उनके पुण्य का उदय कहना चाहिए जो सब ही धनवान्, सब ही गुणवान्, सब ही धर्मात्मा और सबकी परस्पर में गाड़ी मित्रता । बिना पुण्य के ऐसा योग कभी मिल ही नहीं सकता ॥२-५॥

एक दिन ये सब ही मित्र मिलकर एक केवलज्ञानी योगिराज की पूजा करने को गए । भक्ति से इन्होंने भगवान् की पूजा की और फिर उनसे धर्म का पवित्र उपदेश सुना । भगवान् से पूछने पर इन्हें जान पड़ा कि इनकी उमर अब बहुत थोड़ी रह गई है । तब अन्त समय में आत्म हित साधने के योग को उचित समझ उन सभी ने संसार का भटकना मिटाने वाली जिनदीक्षा ले ली । दीक्षा लेकर तपस्या करते हुए ये यमुना नदी के किनारे पर आए । यहीं इन्होंने प्रायोपगमन संन्यास ले लिया ।